कनकदास का काव्य

H
809.8
Am 16 K

अनुवाद : डॉ. परिमला अम्बेकर

कनकदास का काव्य

अनुवाद : डॉ. परिमला अम्बेकर

कनकदास का काव्य

अनुवाद

डॉ. परिमला अम्बेकर
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुर्गी (कर्नाटक)

राधाकृष्ण प्रकाशन

इस पुस्तक का प्रकाशन यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा पब्लिकेशन ग्रांट के तहत प्राप्त आर्थिक अनुदान के अधीन गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा के सहयोग से किया गया है।

भारत ... संस्थान
पंजी. क्र. 153621
दिनांक 24-12-18

ISBN : 978-81-8361-883-0

Library IIAS, Shimla
H 809.8 Am 16 K
153621

H
809.8
Am 16 K

कनकदास का काव्य

© डॉ. परिमला अम्बेकर

पहला संस्करण : 2018

मूल्य : ₹175

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110051

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंज़िल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

KANAKDAS KA KAVYA
Translated by Dr. Parimala Ambekar

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

कुलपति का आशय

गुलबर्गा विश्वविद्यालय अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसन्धान के साथ-साथ विद्यार्थी उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने की दिशा में भी ठोस कदम उठाते आया है। विश्वविद्यालय अपने अकादमिक क्रिया-कलापों में पुस्तकों का प्रकाशन करना और ई-माध्यमों द्वारा समकालीन कला व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र के अत्यन्त स्तरीय साहित्यिक रचनाओं को विद्यार्थियों को मुहय्या कराने के सन्दर्भ में अधिक सजग सक्रिय रहते आया है। इस दिशा में विभिन्न स्रोतों द्वारा आर्थिक अनुदान प्राप्त करने और करवाने की अनेक योजनाओं को भी अंजाम देते आया है।

कला, ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र की पठन-पाठन की अनेक सुविधाओं को विद्यार्थियों तक पहुँचाने के विश्वविद्यालय के इन्हीं विभिन्न प्रयत्नों में हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन भी एक रहा है। यूँ देखा जाए तो गुलबर्गा विश्वविद्यालय अहिन्दी भाषी प्रदेश का हिस्सा है। लेकिन भारत सरकार के हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार की नीतियों के तहत, अपना विश्वविद्यालय भी, अधिक उल्लेखनीय प्रयत्न करते आया है। विश्वविद्यालय के अधीन स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन और अनुसन्धान के साथ-साथ अनुवाद, कला और भाषा अनुप्रयोग सम्बन्धी डिप्लोमा अभ्यास को भी बढ़ावा देने की दृष्टि से अधिक सक्रिय कार्य-योजनाओं को पूरा किया गया है। इन सभी अभ्यास क्रमों में विश्वविद्यालय कन्नड़ और अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा अभ्यास पर भी विशेष जोर देते आया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पुस्तक प्रकाशन ग्रांट के तहत विज्ञान, समाज-विज्ञान और अन्य ज्ञान शाखाओं की पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य हाथ में लेते हुए हर वर्ष हिन्दी साहित्य की पुस्तकों के प्रकाशन पर भी विशेष ध्यान रखा जाता है। यूजीसी की बारहवीं पंच वार्षिक योजना के तहत पुस्तक प्रकाशन

के इस ग्रांट से प्राप्त आर्थिक सुविधा में प्रकाशित होनेवाली यह पुस्तक 'कनकदास का काव्य' इस मार्ग का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। कन्नड़ काव्य-साहित्य की सम्पदा को हिन्दी भाषियों तक ले जाने की श्लाघनीय प्रक्रिया में कनकदास की कविताओं का यह हिन्दी अनुवाद पुस्तक रूप में अपना विशेष महत्त्व रखता है। इसके लिए मैं अपने विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. परिमला अम्बेकर के प्रति अभिनन्दन व्यक्त करता हूँ। यह आशा रखता हूँ कि उनके द्वारा और भी अनेक योगदान हिन्दी अनुवाद साहित्य को इसी तरह प्राप्त होते रहेंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के प्रति भी विशेष धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

—प्रो. एस.आर. निरंजन

कुलपति, गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

कनक काव्य का परिमल...!

देखो, यह है वासुदेव लोकस्वामी
देखो, यह है वासुदेव ॥

कथा बड़ी ही रोमांचकारी है। कनकदास ठहरा नीचकुल के गड़रिया जात का। गुरु व्यासराय अन्य पंडितोत्तम के सम्मुख इस अंश को साबित करना चाहते थे कि भक्ति में कनक कितना गहरा है। ऊँची जाति का दम्भ भरने वाले सारे ब्राह्मण पंडित कृष्ण भक्ति में कितने ओछे हैं। इसीलिए अपनी हथेली पर शालिग्राम को रखकर मुट्ठी बाँधकर सभी ने अपने शिष्यों से पूछा कि बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है। तब, केवल जात का दम्भ भरनेवाले व्यासराय के सारे शिष्य हकबकाने लगे। अन्त में जब कनकदास की बारी आई, तब वे तन्मित होकर गाने लगते हैं—देखो, यह है वासुदेव लोकस्वामी देखो, यह है वासुदेव ॥ शालिग्राम में कृष्ण परमात्मा की छवि को देखना, ब्रह्मांड के अणु-अणु में सगुणरूपी वासुदेव के अस्तित्व के अनुभावी चेतना को अहेसासना, भक्त कवि कनकदास के बिना और को कैसे सम्भव हो सकता था!

कनक द्वारा रचित कीर्तन अद्‌भुत हैं। पौराणिक कथा सन्दर्भ के सहारे कृष्ण के दशावतार का पहेलीबद्ध ढंग से वर्णन करना कनक काव्य शैली की विशेषता है। भगवान कृष्ण चरित्र के आन्तरिक सम्बन्धों का गाँठदार वर्णन, घुमावदार रूप चित्रण शैली, कन्नड़ में मुंडिगे कहलाता है। कवि कनक मुंडिगे लेखन में सिद्धहस्त हैं। कनकदास द्वारा मुंडिगे शैली का अत्यंत सशक्त ढंग से प्रयोग और वर्णन से लगता है, यह उनके लिए जात के आधार पर पांडित्य का, काव्य ज्ञान का अहंकार बघारने वाले समकालीन पंडितों के टक्कर में, अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति कुशलता को दर्शाने का जरिया मात्र था। कनक की मुंडिगे के अनेक सुन्दर नमूने मिलते हैं। सम्पूर्ण भक्ति साहित्य में कनक के समान मुंडिगे रचयिता विरले ही हैं। अलंकारों के समृद्ध प्रयोग में कनक का सानी दूसरा नहीं।

हरिमुखी हरिवाणि हरिवेणि हरिणाक्षि
हरि मध्य हरिगमनी॥ प॥
हरि के नंदन का सखा कहलाये अहेबल के
हरि को तू लिवा ला॥ अ॥

कन्नड़ दास साहित्य में यह कथन प्रचलित है—''कनक को छेड़ो नहीं, छेड़कर लड़ो नहीं।'' [कनक साहित्य दर्शन-4, पृ. 549] पुराण कथाओं में, वेद उपनिषदों में उल्लिखित विष्णु की दशावतार की कथाएँ, अवतार लीलाओं के कथा सूत्रों का शृंखलाबद्ध वर्णन, कृष्ण के अवतारी नायक चरित्र के अनन्त अद्‌भुत सम्बन्धों का आवृत्ति रूप में वर्णन, सचमुच में पाठकों के लिए एक ढंग से अर्थ को पाने की लड़ाई ही है। कनक की काव्य पहेलियाँ, समासबहुल काव्य भाषा, प्रतिमा और श्लेषों का भरमार और वर्णन की आवृत्तियों से वे पाठकों के लिए लोहे के चने बने हैं जिन्हें समझने में अच्छे-अच्छे पंडितों के छक्के छूट जाते हैं। कनक रचित मुंडिगे याने पहेलियाँ उनका काव्य पांडित्य और कलात्मक अभिव्यक्ति के अगाध प्रयोग है।

विष्णु के दशावतार का वर्णन, अवतारी कृष्ण के नाना लीलाओं का वर्णन कनकदास ने बहुत ही रमकर एवं जमकर किया है। अपने आराध्य देव की स्तुति में कनक कहीं भी खोताई नहीं करते। लगता है स्तुति के लिए अलग-अलग प्रसंगों की खोज में कनक लगे ही हुए हैं। अपने सगुण साकार सुन्दर और धीरशूर आराध्य देव के हर रूप का, हर कलाओं का वैभवमय वर्णन करते हैं। दास साहित्य के श्रेष्ठ कवि कनकदास भगवान की स्तुति में रूप वर्णन में, प्रेमी कृष्ण और प्रेमिका राधा के मध्य की रागात्मक और माधुर्य सम्बन्धों का आधार लेते हैं। प्रेमिका राधा, प्रोषितपतिका राधा, मिलनाकांक्षी राधा ऐसे अनेक रूपों के द्वारा कृष्ण के विविध अवतारों का मुंडिगे शैली में वर्णन करते हैं। इन लीला वर्णनों में स्तुतिनिंदा काव्य रूढ़ी का भी अत्यंत ही आत्मीय और अद्‌भुत प्रयोग कनक ने किया है। एक उदाहरण देखिए :

हे ललितांगि भला कैसे मन दे बैठी
असमान ग्वाला को, कुलीन अकुलाये को
पुत्र का देवर बने, पुत्री का पति बने
पुत्री का दामाद बन, दामाद का दामाद बने को॥
....भला कैसे मन दे बैठी।

कनकदास, देवी लक्ष्मी से पूछते हैं, हे देवी भला ऐसा क्या पाया उस कृष्ण में। ले देकर एक गाय चराने वाले गोपाल से मोह किया? अपने आराध्य के कमियों को खोजकर बताते हुए, व्यंग्य में आत्मीयता को घोलकर देवी लक्ष्मी से किया गया प्रश्न सचमुच लीला वर्णन का सहृदय और सहज रूप है, पाठकों का मन मोहनेवाला है।

कनकदास की भक्ति अगाध थी। उनकी भक्ति जाति आधारित असमान सामाजिक व्यवस्था के प्रतिरोध में मनुष्य प्रयत्न का एक भावनात्मक उदाहरण है। जिस मन्दिर में निचले जाति के कनक का प्रवेश निषिद्ध था, उसी मन्दिर के भगवान को, मनुष्य निर्मित अमानवीय व्यवहार को लाँघकर, नियम सिद्धान्तों की दीवार को तोड़कर, एक निम्न जाति के भक्त को दर्शन देने के लिए उसकी भक्ति बाध्य करती है। यह कथा प्रचलित रही है कि, कनकदास मन्दिर के पिछले भाग में ठहरकर वीणा बजाते हुए गाने लगते हैं। मन्दिर के गर्भ गृह की मूर्ति पिछली दीवार की ओर मुड़ती है और दिवार में एक बड़ा सा सुराख़ बनकर, उस किटकी के माध्यम से अपने भक्त कनकदास को दर्शन देते हैं। आज भी यह कनकन किंडि जिस दीवार के छेद के माध्यम से, कनकदास को कृष्ण परमात्मा ने अपना रूप दिखाया था, कनकदास की किटकी के नाम से भगवान के भक्तवत्सलता स्वरूप का द्योतक बना खड़ा है। कर्नाटक के उडुपी का यह कृष्ण मन्दिर, भगवान कृष्ण के दिव्य स्वरूप के लिए जितना देशभर में जाना जाता है, उससे भी अधिक वह कनकन किंडि के लिये भी प्रसिद्ध है।

कन्नड़ दास साहित्य के लिए, कनकदास का योगदान अपार है। कनकदास जी का मूल नाम तिम्मप्पनायक रहा था। बच्चम्मा और बीरप्पनायक नामक एक गड़रिया जात के दम्पति के पुत्र कनकदास वृति से दंडनायक तो थे लेकिन युद्ध की भीकरता को देखकर, वैराग्यमय जीवन स्वीकारते हैं। सेनापति से भक्त कवि बनते हैं। कर्नाटक के जिला हावेरी के बाडग्राम में ई. सन् 1505 में जन्मे कनकदास मोहनतरंगिणि, नळचरित्रे, रामधान्य चरित्र, हरिभक्तिसार आदि अद्भुत रचनाओं को देते हैं। उनकी रचनाएँ जहाँ भक्ति की सहज और मार्मिक स्वरूप को प्रतिपादित करती हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक समानता का निरूपण भी करती हैं और जाति विषमताओं के विरुद्ध में आवाज भी उठाती हैं।

प्रस्तुत अनुवाद, कन्नड़ ग्रन्थ 'कनक साहित्य दर्शन-4' (पृ. 521 से लेकर 570) में 'पौराणिक वावे वरसेय मुंडिगेगळु' और 'अनुभावद निगूढ मुंडिगेगळु'

अनुभागों में संग्रहित कनकदास द्वारा रचित पहेलियाँ जो, पौराणिक कथाएँ एवं अनुभाव के निगूढ़ भावों को विशेषतया बिम्बित करते हैं, उन पर आधारित है। यूँ तो कनकदास के मुंडिगे रचनाओं का अर्थ निकालना और अर्थ के निगूढ़ और विशिष्ठ सम्बन्धों के पौराणिक आधारों को खोजना अपने आप में चुनौती ही है। कनक काव्य में उनकी यह भाषा और शैलीगत क्लिष्टता काव्य सौन्दर्य बनकर प्रस्तुत होता है। पौराणिक अर्थ सम्बन्ध और संगीत के रागरागिनियों में आबद्ध ये पहेलियाँ, एक विलक्षण सांस्कृतिक और जातीय भक्ति सौन्दर्य को पाठकों को प्रदान करते हैं। यह माना जाता है कि, लगभग दास साहित्य के ढाई सौ से भी अधिक दासों की परम्परा में कनकदास अकेले ही ऐसे कृष्ण के भक्त और दास साहित्य के दासकूट के अद्भुत कवि माने जाते हैं जो अन्यों की तरह ब्राह्मण वर्ण से न होकर तबके समुदाय के जन्मे थे। लेकिन 'भक्ति किसी जाति या धर्म की बपौती नहीं' कथन के लिए कनकदास का चरित्र और उनका रचा साहित्य ही काफी है।

प्रस्तुत अनुवाद में मैंने, अर्थ और शब्द सौष्ठव को बचाए रखते हुए, कनक के मूल रचना स्वरूप को हिन्दी के पाठकों को यथावत् परिचय करवाने के उद्देश्य से, मूल कन्नड़ शब्द संरचना और समासरूपता के सौन्दर्य को बनाए रखने का प्रयत्न किया है। कन्नड भाषा की अपनी ही एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है और कर्नाटक की मिट्टी की अपनी ही एक धार्मिक परम्परा रही है साथ ही कृष्ण भक्ति काव्य का एक विशेष अनुभाव सौन्दर्य भी। कन्नड़ दास साहित्य के इस विशेष आध्यात्मिक अनुभावी सौन्दर्य को, दास साहित्य में प्रयोगित कन्नड़ भाषा के शैलीगत अभिव्यक्ति शक्ति को इन पहेलियों के अनुवाद के माध्यम से देने का प्रयत्न हुआ है। अनुवाद सुन्दर है तो प्रामाणिक नहीं, प्रामाणिक है तो सुन्दर नहीं की गुत्थियों में न पड़कर, कन्नड़ दास साहित्य की आध्यात्मिकता और कृष्ण भक्ति की वैष्णव परम्परा की सांस्कृतिक सेंस को बनाए बचाए रखने का प्रयत्न प्रस्तुत अनुवाद में मैंने किया है।

प्रस्तुत अनुवाद ग्रन्थ 'कनकदास का काव्य', यूजीसी द्वारा प्रकाशन ग्रांट के अधीन प्रकाशित करने के सभी प्रकार की सुविधा और अनुमति प्रदान करने लिए गुलबर्गा विश्वविद्यालय के तमाम अधिकारी वर्ग के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन के प्रति भी अतिरिक्त आभार।

—डॉ. परिमला अम्बेकर

कनकदास का काव्य

अनुक्रम

भैरवी—रूपक ताल	7
कांबोदी—झंपेताल	11
मध्यमावति—मट्टे ताल	13
केदारगौळ—आदिताल	18
कांबोदि—आटताल	22
मोहन—झंपे ताल	25
मोहन—आट	28
भैरवी—आटताल	31
सावेरि—आटताल	34
यरकुल कांबोदि—त्रिपुड	39
आनंद भैरवी—आटताल	42
भैरवी त्रिपुड	46
पूर्वी कल्याणि—आट	49
कल्याणि—आदिताल	50
राग ?—ताल ?	53
राग—केदारगौळ	54
सुरटि—भापु ताल	55
राग ?—ताल ?	57
सौराष्ट्र—भापुताल	58
हिन्दुस्थानी काफी—मुट्टताल ?	61
सौराष्ट्र—मट्टे ताल	63

भैरवी—रूपक ताल

देखो, यह है वासुदेव लोकस्वामी
देखो, यह है वासुदेव ॥ प ॥

यह है वासुदेव यह समस्त लोकस्वामी
दूत कृपा कर रथ चढ़े हयधारे हाँके हैं ॥ अ ॥

दनुज स्वामी के बंधु पित के पित सम्मुख कौरवेन्द्र के
अनुजास्वामी का शिर छेदते हुवे—तव
अनुजास्वामी को अग्निस्पर्श से रक्षित रुक्म
अनुजास्वामी की मूर्ति को देखो हे... ॥ 1 ॥

नरसुत को अरण्य में गिरि पर ठाडे तव रोष में
शरों का सान चढ़ाते जानकर
त्वरित से पुकारे चिह्न दिखाए पत्र लहराए हुवों के
शिरो को छिद्रद देव को देखो हे... ॥ 2 ॥

सृष्टिकर्ता का सुपूतप्रिय भूषण का आशन रहे
जेष्ठ पुत्र को वैरि की जंघा बेधने बोध कर
कष्टनिवारित भक्त इच्छा रक्षक उत्कृष्ट
महिमतव देव को देखो हे... ॥ 3 ॥

क्रूरमय फणिप बाण तरणिज के प्रयोगित
वीरनर की ओर आता हुआ देखकर
धरिणी को पाद से अमुक कर चरणभजक नर की रक्षा किए
भारतकर्ता बने देव यही देखो हे...
व्योमकेशवासित दिशा को सर्व जग को दिखाए
सामजचढ़े धावित की शक्ति जाने
प्रेमपूरित हो छाती ताने सेवक रक्षित सार्वभौम
बाडदादिकेशव को देखो हे... ॥ 5 ॥

भाव : यह श्रीहरि की महिमा को पौराणिक घटनाओं के माध्यम से सादरित करनेवाला कीर्तन है। इसे संबंधों की आवृत्ति (वावेवरसे) की लघु पहेली (मुंडिगे) भी कह सकते हैं। मुख्यतया यह कनकदासजी के साधक जीवन के संदर्भ में घटित घटना से उगमित हुआ है। कनकदासजी की अपरोक्ष ज्ञान को साबित करने हेतु, इसी के माध्यम से असूया पर मूढ पंडतोत्तम शिष्यों की आँखें खोलने के लिए गुरु व्यासराय ने हथेली में सालीग्राम को धर कर मुष्ठी में क्या है का प्रश्न सभी से पूछने पर, वे सभी हकलाने जब लग गये तब अंत में कनकदास से पूछने पर, 'इतनीग वासुदेव' (अब यह वासुदेव है) कहते हुए तन्मित होकर गाते हैं। इस गडरिये के अगाध ज्ञान को पहचानकर, इर्षितों के मुँह काले पड़ गए। आघात पाकर खंबे की तरह बैठ गए, नामक घटना का जिक्र पुरंदरदास नामांकित गीत में उद्धृत होने का यहाँ हम स्मरण कर सकते हैं।

अर्थ : वासुदेव—वसुदेव का पुत्र, कृष्ण
दूत कृपा कर—अर्जुन पर कृपा कर

1. दनुजस्वामी—हिडिंबा का स्वामी भीम
के बंधु—धर्मराय, पित—पिता यम
के पित—यम का पिता सूर्य
कौरवेन्द्र अनुजास्वामी—दुर्योधन की बहन दुश्यला का स्वामी जयद्रथ

शिर छेदते—सिर धड़ से अलग करते (अपना पुत्र अभिमन्यु का वध करनेवाले को सूर्यास्त से पहले मार डालने का शपथ अर्जुन करना है। उसे झूठा कर उसे स्वयं ही अग्नि के लिए आहुति बनाने हेतु कौरव जयद्रथ को छुपाकर रखता है। तब कृष्ण अपने चक्र से सूर्य को ढाँपकर शाम होने जैसा करता है। जयद्रथ के बाहर आते ही चक्र सरकाकर सूर्य को चमकवाकर, अर्जुन के हाथों जयद्रथ का वध करवाने का प्रसंग)

तवअनुजास्वामी—अपनी बहन सुभद्रा का स्वामी अर्जुन

रुक्मअनुजास्वामी—रुक्मांदग की बहन रुक्मिणी का स्वामी कृष्ण (रुक्मांगद अपनी बहन रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ करने की ठानी थी। रुक्मिणी कृष्ण से मोहित हुई का समाचार उसे पहुँचाते ही, कृष्ण उसका हरण कर विवाह करने का प्रसंग)

2. नरसुत—अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु
   गिरि—पहाड़, शर : बाण, सान चढ़ाना : धारदार करना
   पत्र—तलवार
   (अभिमन्यु को मरने के लिए क्यूँ छोड़ा गया, इसका पता नहीं चलता। भविष्यद्रष्टा कृष्ण यह क्यूँ होने दिया) ?

3. सृष्टिकर्ता—ब्राह्म, कासुत : शिव, प्रिय भूषण : उसका आभरण सर्प
   आशन—आहार पवन, जेष्ठपुत्र : भीम, वैरी जंघा : दुर्योधन की जंघा
   बेधने बोधित—वैरी की तोड़ने के लिए उपदेशित कृष्ण

4. फणिपबाण—सर्पास्त्र
   तरणिज—सूर्यपुत्र कर्ण
   नर की ओर—अर्जुन की ओर
   धारिणी—भूमि
   पाद से अमुककर—पाद से दबाकर

5. व्योमकेश—शिव
   वासित दिशा को—इशान्य दिशा का श्मशान सर्व जग को दिखाए

सामजचढ़े—इशान्य दिग्गज सुप्रतीक पर चढ़कर
धावित की—आनेवाले भगदत्त की
शक्तिजाने—वैष्णवास्त्र को देखकर
छाती ताने—मध्य आकर
सेवकरक्षिक—सेवक अर्जुन का रक्षक
अशक्तिजाक्ने प्रेमपूरित हो छाती तानेदतत

कांबोदी—झंपेताल

कामपित को भेजो हे रमणि ॥ प ॥

कोविदजन प्राप्त बडदादिकेवशव को ॥ अ ॥

चंद्रवंशराय के अनुज का सखा को
चंद्रवैरी पर सोयेहुवे को
चंद्रमा सहोदरी का हाथ थामनेवाले को
चंद्रदाम धारक को घर भेज हे कमलाक्षी ॥ 1 ॥

कमलनाभ को कमल सखा कोटितेजित को
कमल कोरक में जनित के पिता को
कमलको हाथ में धारित को त्वरित से
कमलवदन को घर भेज हे कमलाक्षी ॥ 2 ॥

बालपन में अनेक असुरों को भेदनेवाले को
लीला से भक्तों के पालनकारक को
नील मेघ श्याम भाग्यपुर में स्थित
श्रीलतांगी का रमण आदिकेशव को ॥ 3 ॥

भाव : सतिपतिभाव आधारित भगवत्‌अनुसंधान का यह कीर्तन है। अपनी ओर्व सखी से अपने प्रियतम आदिकेशव को लिवा लाने के लिए प्रियतमा (भक्त कनकदास) द्वारा बोल भेजने का तंत्र (कला) यहाँ प्रयोगित है।

अर्थ : कामपित—काम का पिता (विष्णु)
कोविदजन—ज्ञानिजन, मेधावीजन

1. चंद्रवंश...सखा को—चंद्रवंश का राजा धर्मराज का भाई अर्जुन का मित्र रहा (कृष्ण)
चंद्रवैरी पर...सोये—चंद्रका शत्रु बने सर्प पर सोनेवाले को (विष्णु)
(ग्रहण के समय सर्प चंद्र को निगलता है, इस मान्यता के आधार पर सर्प को चंद्रवैरी कहा गया है। चंद्र ग्रहण के पीछे का वैज्ञानिक सत्य अब हम जानते हैं।)
चंद्रमा सहोदरी...धरनेवाले को—चंद्र की सहोदरी लक्ष्मी का हाथ पकड़नेवाले (विष्णु)
चंद्रदाम—चंद्रहार : सोने का हार धारण करनेवाला (कृष्ण) चंद्र के लिए सुवर्ण का अर्थ और दाम के लिए हार का अर्थ प्रचलित है
कमलाक्षी—कमल के समान नेत्रों वाली

2. कमलनाभ को—नाभी में कमल धरनेवाले को (विष्णु)
कमलसखा—सूर्य
कमलसखा कोटितेज को—कोटिसूर्य समान तेजस्वी विष्णु को
कमल...अय्यको—कमल में जन्मे ब्राह्म के पिता को (विष्णु)
कमलवदन—कमल के समान मुखवाला (विष्णु)

3. असुरजन—राक्षस
भाग्यपुर : विजयनगर (भाग्यपुर शब्द कुछाद कीर्तनों में भागानगर के नाम से भी प्रयोगित है) श्रीलतांगि : लक्ष्मी

मध्यमावति—मट्टे ताल

आज तू लिवा ला री—न आए श्री
गोविन्द गर कुपित हो तो—विरह ताप में
तपकर सहा न जाए—सखी, तू ला दिखा री ॥ प ॥

क्लेशित हो फिर भी मनदानंद से
नंदनंदन जाने सहन कर
कभी बिछड़ना सकूँगी लिवा लाकर
एक कर दे हे मंदगमनी ॥ अ ॥

पैर बिना खेले—वेद ला धरे
पैरहीन को ढोये—अमृत ला धरे
पैर तौल देख छेदित—गज उन्मत्त
पैर से ही हंतक रूप में
पैर से रिपु को छेदे
पैर से नापा जो स्वयं मेदिनी
पैर पर चला है जो भार्गव
पैर पर वनवास को निकले
पैर से काळि को मर्दित
पैर पर त्रिपुर को विजयित के
पैर पर वारि जाऊँ तेजिरूढ़ के ॥ 1 ॥

अनिमिष देखे—सर झुकाकर
फाँकित पैने दाड से खेले—स्तंभ से निकले
आतुरता से माँगे—भूभुजगण काटे
शिव धनुष्य को भेदे—देवकी
कुवर नग्न हय पर चढ़े
विविदाब्धि में खेल गिरिधर
जड़ों को स्वादे बाल पर कृपा कारी
अवनी माँगकर फरसा धारे
सँवार कर दशशिर माखन चोरे
युवतियों का बिगाड़ कर व्रत हय पर
त्वरित गति से चढ़नेवाले को ॥ 2 ॥

वर मत्स्य नगधर को—सूकर सिंह को
भिक्षुक माता संहारक—वर प्रदान कर शबरी को
पशु चरानेवाले निर्वाणक को—अकारूढ़ को
जांघरहित भार ढोनेवाले मुरूढ़ क्रूर को
उरको भेदित विप्र नृपअरि
धरणि जा स्वामी कृष्ण गगन में
पुर को दहनेवाले तेजिरूढ़ को
शोभित जलज कूर्म वराह
नरहरि द्विज गर्दन काटनेवाले भूसुता का वर
शौरि बुद्ध को हयचढ़े आदिकेशव को ॥ 3 ॥

भाव : 'शरण सति लिंग पति' रूप के भाव में कनकदास यहाँ पति से बिछुड़ि, विरहिणि बनी पति को लिवा लाने हेतु सखि से अनुनय करने की शैली में भववद् अनुसंधान करना दीख पड़ता है। यह भाव संपूर्ण भक्ति साहित्य में दिखाई पड़ता है। तीन पादों से युक्त इस कीर्तन में, पहले पाद में दशाव७तार का वर्णन है, दूसरे पाद में दुगुने दशावतार का वर्णन है, तीसरे पाद में तिगुने दशावतार का वर्णन है। हरेक पाद के

ग्यारह वाक्यों के क्लुप्त परिधि में, पहले पाद में एकपट दूसरे पाद में दुप्पट और तीसरे पाद में तिप्पट दशावतारों के वर्णन को बांधकर रखने की आद्यता (वैभव) गमनार्ह है।

अर्थ : 1. पैर बिना खेले—मत्स्यावतार मीन के पैर नहीं होते
पैरहीन को—कूर्मावतार पैरहीन को अर्थात मंदर पर्वत
पैर तौल देख छेदित—वराहवतार देख छेदित याने भेदना, काटना
पैर से ही...रूप—सिंहाकार में
पैर से रिपु को छेदे—नरसिंहावतार, पैर पर डालकर वैरी को छेदनेवाला
पैर से नापा...मेदिनी—वामनावतार
पैर पर...भार्गव—परशुरामावतार
पैर पर...निकले—रामावतार
पैर से...मर्दित—कृष्णावतार (काळिको-काळिंग नामक सर्प को)
पैर पर त्रिपुर को
पैर पर विजयित के—बौद्धावतार
पैर पर तेजिरूढ़—कल्क्यावतार तेजि-घोडा

2. अपलक देखे—मत्स्यावतार (मीन अनिमिष अर्थात
बिना पलकों का)
सर झुकाकर—कूर्मावतार (पर्वत ढोने हेतु गर्दन दबसा जाता है)
फाँकित...खेले—वराहवतार
स्तंभ से निकले—नृसिंहावतार
आतुरता...माँगे—वामनावतार
भूभजगण काटे—परशुरामवातार
शिव...भेदे—रामावतार, देवकी कुवर—कृष्णावतार
नग्न—बौद्धावतार
हय पर चढ़े—कल्क्यावतार
विविदाब्धि में खेल—मत्स्यावतार (अब्धि—समुद्र)
गिरिधर—कूर्मावतार
जड़ों को स्वादे—वराहवतार (वराह अन्य आहार के साथ मूलिकाड़ आदि को घोंटकर खाता है)

बालक कृपाकारी—नरसिंहावतार
अवनी माँगकर—वामनावतार (अवनी—भूमि)
फरसा धारे—परशुरामावतार
सँवारकर दशशिर—रामावतार (सँवारना—काटना दशशिर—रावण)
माखन चोरे—कृष्णावतार
युवतियों...व्रत—बौद्धावतार
हय पर...चढ़े—कल्क्यावतार

3. वर मत्स्य—मत्स्यावतार
नगधर को—कूर्मावतार
सूकर—वराहावतार
सिंह को—नरसिंहावतार
भिक्षुक—वामनावतार
माता संहारक—परशुरामावतार
वर प्रदान कर शबरी को—रामावतार
पशु चरानेवाले—कृष्णावतार
निर्वाणक को—बौद्धावतार
अकारूढ़ को—कल्क्यावतार
जांघरहित—मत्स्यावतार
भार ढोनेवाले—कूर्मावतार
मुरूढ़ क्रूर को—वराहावतार
उर को भेदित—नरसिंहावतार
विप्र—वामनावतार (विप्र—ब्राह्मण)
नृपररि—परशुरामावतार (नृप अअरि)
धरणिजास्वामी—रामावतार (धरणिजा—सीता स्वामी—पति)
कृष्ण—कृष्णावतार
गगन में पुर को दहनेवाले—बौद्धावतार
तेजिरूढ़ को—कल्क्यावतार
जलज—मत्स्य, मीन (जलज माने कमल का अर्थ देता है लेकिन कनकदास ने जल में रहनेवाले मीन के लिए भी जलज शब्द का प्रयोग करते हैं—जिसका जन्म जल में ही होने के कारण)

कूर्म—कछुवा, वराह—सूवर
नरहरि—नरसिंह
द्विज—ब्राह्मण (वामन)
गर्दन काटनेवाले—परशुराम
भूसुता का वर—राम
शौरि—कृष्ण
बुद्ध—बौद्धावतार
हयचढ़े—कल्क्यावतार (हय-घोड़ा)

केदारगौळ—आदिताल

दिखा शीघ्र हे सखी
मोटी मोती की लड़ी भार हुई है मुझे ॥ प ॥

चौदह लोकों का पालक दयानिधि
क्यूँ नहीं आ रहा है घर हे सखी री ॥ अ ॥

तरणि तनय सुत के मुख से असत्य
तत्वरिता से बुलवाया
तरणि सुत बाण के आघात से बचाने रथ को
धरा में धंसाए देव को
तरणि को ओट कर शिर को काटने
नर से सूचित करनेवाले को
तरणि के संग पंथ बना फिरनेवाले को
तरळ के स्वामी को दिखा जा हे सखी री ॥ 1 ॥

गोत्रभेदी सुत के सुत की सति के
मातुल को
अंधकार में जाकर टुकड़े करनेवाले के देह को
लपेटकर बाधित को
तत्व जानकर सुतत्व को बोधित कर
उत्तर देनेवाले के

परदादा की माता को जन्माये देव को
पास बुलाला हे सखी री ॥ 2 ॥

वर मुनिगण मिलकर सर्वोत्तम कौन है,
परिशोधित करना ठानकर
रभस से भृगुमुनि आ कुपित होने पर त्वरित से
चरण सहलानेवाले
नाना परि से परम भक्तों का पालक देव
सुरों को अभयप्रदायक
वरवेलापुरदादि केशव को
भुला नहीं पाऊँगी री मन से—हे सखी ॥ 3 ॥

भाव : विरहिणी अपने प्रियतम के समागम की सुख कातुरता से हृदय के आकर्षण विकर्षणों को, संवेदना के उतार-चढ़ाव को छुपाएँ रखने से असमर्थ होकर, 'कैसे भी कर किसी रूप से भी उसे बुला लाने के लिए' कहते हुए सखी से विनती करने के लय में कनकदास ने अपने आराध्यदेव आदिकेशव (विष्णु) के समागम के लिए आतुर कातुरता से ललचाने की मन:स्थिति को यहाँ दर्शाया है।
प्रियतम के शक्तिसामर्थ्यों को लीलाविनोदों को हृदय में भरकर गुणगान करने हेतु पौराणिक संबंधों के संकोलों के रूपकों के घने अरण्यों की गिरा कंदराओं में घुमाकर, गिरिश्रृंगों की श्रेणि-श्रेणियों पर चढ़ाकर उतराते हुए लोकचेष्टा (क्रियाकलाप) के लिए बीजरूपी सूर्य (प्रस्तुत विष्णु) का दर्शन करने कहते हुए टीले पर बिठलाकर न्यौता देने के ढंग का है यह कीर्तन—जैसे कवि के कहने की शैली हो, 'श्रम की पीड़ा के बिना वस्तु (परब्राह्म) अप्राप्य है।'

अर्थ : 1. तरणितनयसुत के मुख से—सूर्यपुत्र यमधर्म का पुत्र धर्मराज के मुख से, तत्वरिता से बुलवाया : शीघ्रता से कहलवाये श्रीकृष्ण को (द्रोण के वध के लिए श्रीकृष्ण ने धर्मराय के मुख से 'अश्वत्थामो हत:

कुंजर:' कहलवाकर, कुंजर नामक शब्द द्रोण के कान पर न पड़ने हेतु शंख फूँकता है। पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया समझकर शस्त्र त्यागने की घड़ी में उसे मरवाने का संदर्भ)

तरणिसुतबाण के...धंसाएँ देवको—सूर्य का पुत्र कर्ण द्वारा प्रयोगित सर्पास्त्र से अर्जुन को बचाने के लिए रथ को अवनी में धंसाए श्रीकृष्ण को

तरणि को ओटकर...सूचित करनेवाले को—सूर्य न दिखे जैसा ओट करके जयद्रथ का सर काटने के लिए अर्जुन को सूचिनेवाले कृष्ण को (जयद्रथ अभिमन्यु का वध किया था। इसीलिए अपने पुत्र का वध करनेवाले को सूर्य के अस्थ होने तक मार गिराने की शपथ अर्जुन ने ली थी। इसे जानकर जयद्रथ सूर्यास्त होने तक दिखाई नहीं पड़ने के लिए अपने आप को छिपा लेता है। तब श्रीकृष्ण ने अपने चक्र से सूर्य को ही ओट करके सूर्यास्त होने का भ्रम उत्पन्न करता है। तब बाहर आनेवाले जयद्रथ की बलि होने का प्रसंग)

तरणि के संग पंथ बना...तरळ के स्वामी—सूर्य को फल मान कर मार्ग पकड़े जाकर भूमि पर मुँह के बल गिर के लौटनेवाले तरळ (आंजनेय) का स्वामी (भक्त बनानेवाला विष्णु)

2. गोत्रभेदी—पर्वतों को भेदनेवाला इंद्र, सुतके—उसका पुत्र अर्जुन, का सुत—उसका पुत्र अभिमन्यु, सति का—उसका मामा कीच को, अंधकार में जाकर टुकड़े करनेवाले—रात्रि के समय अंधकार में जाकर टुकड़े-टुकड़े करनेवाले भीम के, देह को लपेटकर बाधित—उसके देह को लपेटे हुए भुजंगरूप का शापग्रस्त नहुष का, तत्व को जानकर—सूक्त उत्तर देनेवाले धर्मराय के, परदादा—उसका परदादा भीष्म, माता को—गंगा को, जनेदेव को—विष्णु को।

3. वर—श्रेष्ठ

रभस—वेग से (त्रिमूर्तियों में कौन सर्वोत्तम है, इस अंश के निर्णय के लिए सभी मुनि गण मिलकर भृगु मुनि को उस दायित्व को सौंपते हैं। वह बृह शिव के पास जाकर उनके दोषों को पहचानकर शाप देकर विष्णु के पास आता है। उसे, पत्निलोल बनकर सुख शय्या पर सोया

देखकर कुपित होकर उसके छाती पर लात मारता है। तब विष्णु कुपित हुए बिना 'अरे ऋषि के पाद को चोट पहुँचा है' कहते हुए उनके पादों को सहलाते हुए भृगु मुनि के पाद में के आँख को मसल डालता है। ऋषि का वह आँख ही उसके इन सारे कोप तापों का, आर्भटता का कारण ठहरा था)

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
पंजी. सं. 153621
दिनांक
[illegible]

कांबोदि—आटताल

राजवदनी सुरराज के पुर में
राजित कुज को ॥ प ॥

राजीव मुखि कहलाई अनुरक्त सखि को दिये
स्वामी को दिखला जा ॥ अ ॥

शिखर से उतरी हुई से जनित पुत्र के पौत्र
गोदी खिलाये के पित को
ग्रास बनाए हुए का वैरी पर चढ़ जग को
घूमकर आये हुए को
अंधेरे में युद्ध कर हत के पिता का शिर
काटनेवाले धीर को
मृत पुत्र को ला देनेवाले को
मेरे पास बुला ला जा ॥ 1 ॥

वरूषवैद से नामांकित माता के अनुज को
धारित के सखा को
धुर में अपना सहायक बनाकर
भूवर को स्नेहप्रदायी
सुरगिरि की फेरी लगानेवाले पुत्र के हाथों
आशीष प्रदान कर दान को पानेवाले

धरणिजात का शिर भेदकर नारियों को
पुर को लिवा लानेवाले को दिखा जा ॥ 2 ॥

बारहवें नक्षत्र की नामांकिता के
कन्या के पिता के घर में
अपने आप को छिपाकर रक्खी महारानी के
रंग का रक्षक
पन्नंग शयन बेलापुर का स्वामी
अपने ध्यानित भक्त को
क्षमा कर कृपापालक चेन्नादिकेशव
प्रसन्नित को मुझे दिखा जा ॥ 3 ॥

भाव : शरणसति लिंगपति रूप के लय का विरहगीत के समान यह कीर्तन पौराणिक संबंधों की शृंखलाओं के जटिल गाँठ के घने जंगल में चलनेवाला पहेली (मुंडिगे) है। अपने ज्ञान, प्रतिभा, पांडित्यों के संबंध में कमतर की दृष्टि अपनाकर घृणा करनेवाले उच्चवर्ग के पंडितोत्तमों की आँखें खोलने के लिए संबंधों की शृंखलाओं की पहेली रूपी आटे को सेवईं की ओखली में रखकर शक्ति रखनेवाले मूँठ पकड़कर सांसें रोके दबाने से नीचे उतरनेवाले रेशे-रेशे केशव सेवईं की रुचि देखने के लिए आह्वान देने के समान है।

अर्थ : राजवदनी—चंद्रमुखी
सुरराज—देवेन्द्र
पुर—अमरावती
राजित कुजको—पारिजात वृक्ष
राजीव मुखि—कमलमुखी
अनुरक्त सखि को दिये—अपनी सति रुक्मिणी को दिये

1. शिखर से उतरी हुई से—गंगा से
जनित पुत्र के—भीष्म के

पौत्र—पौत्र धर्मराय ने
गोदी खिलाये—गोद में खिलाए भीम के
पित को—वायु को, ग्रास बनाए हुए—सर्प के
वैरी पर चढ़—शत्रु रहे गरूढ़ पर चढ़का
जग को घूमकर...को—श्रीहरि को
अंधेरे में युद्ध कर हत—अंधेरे में युद्ध करके मृत इंद्रजीत के
पिता का—पिता रावण का
शिर...काटनेवाले धीर को—राम को
मृत पुत्र को ला देनेवाले को गुरु संदीप महर्षि के मृत पुत्र को फिर से ला देनेवाले कृष्ण को

2. वरुष...नामांकित—प्रजापति कहलानेवाले ब्राह्म के
माता—लक्ष्मी देवी के, अनुज को—चंद्र को
धारित...सखा को—धारित शिव का सखा श्रीहरि को
धुर में अपना...स्नेहप्रदायी—कुरुक्षेत्र युद्ध में अर्जुन का सारथी बनकर स्नेह जतानेवाले श्रीकृष्ण को
सुरगिरि की फेरी लगानेवाले—मेरु पर्वत की फेरी लगाकर आनेवाले सूर्य का
पुत्र के—कर्ण
के हाथों...दान को पानेवाले—ब्राह्मण वेश में जाकर कर्णकुंडलों को दान में प्राप्त करनेवाले श्रीकृष्ण को
धरणिजात...पुर को लिवा लानेवाले—भूदेवी का पुत्र नरकासुर को मार कर 16000 राजपुत्रियों को द्वारका लिवा लानेवाले श्रीकृष्ण को

3. बारहवें नक्षत्र—उत्तरा नक्षत्र
नामांकिता कन्या—उत्तरादेवी के
पिता के घर में—पिता विराट के घर में
अपने आप...महारानी के—अज्ञातवास में अपना नाम बदल लेने वाली द्रौपदी के
रंग का रक्षक—मान की रक्षा करनेवाले श्रीकृष्ण को
पन्नंग शयन—शेषशायी विष्णु

मोहन—झंपे ताल

फुल्लवदनी सही नहीं जाती, काम का शर बेधने से
तल्लणित हुई हूँ ॥ प ॥

नामी मल्लों को मार गिराए
प्रियतम को दिखा जा री... ॥ अ ॥

मृगधर वैरी, वैरी की भुजा चढ़ आनेवाले
जगदाधिपति बने
अगजा पति के नग को उठानेवाले को
रोष से पछाड़नेवाले
दिनदहाड़े मोहनेवाले के पुत्र के अनुजों से
वैर बरतनेवाले
शिशु स्वयं ही मामा के सिर को
भेदनेवाले को दिखा जा री ॥ 1 ॥

अंधनृपाल के सर्वपुत्रों को
मारनेवाले पाँचों के जीजा को
पिता के जेष्ठ कहलानेवाले को
वंदित के भाई को
सिंधु मंथन में जनित के पति
मुकुंद को दिखा जा री ॥ 2 ॥

मंगल जननि से अभयित हो चुराकर
जल में छुपा रखनेवाले को
पीछा कर उसका अंगछेद कर
वेदों को लानेवाले
मंगल महिम भुजंग शयन नारि
भंग का रक्षक
व्यवधान बिना कागिनेलेयादिकेशव
नरसिंग को मुझे दिखा जा ॥ 3 ॥

भाव : सतिपति भाव के भगवत् अनुसंधान में लीन विरहिणि के गीत के समान है यह कीर्तन। सखि ओर्व को अपने प्रियतम के महिमातिशय का वर्णन करते हुए उसे लिवा लाकर संयोगानुभव प्रदान करने हेतु किए गए अनुरोध के तंत्र का प्रयोग प्रस्तुत है।

अर्थ : फुल्लवदना—खिले पुष्प (कमल)के समान मुखवाली
काम का शर—मन्मथ का बाण
तल्लण—अस्वस्थ
मल्ल—शूर

1. मृगधर—हिरन को धारण करनेवाला (चंद्र)
मृगधरवैरी—सर्प
मृगधर वैरी वैरी—गरुड़
मृगधर...अधिपति बने—गरुड़ पर आरूढ़ होकर आनेवाले श्रीहरि
अगजा—पार्वति
अगजापति—शिव
नग—पर्वत
अगजा...पछाड़नेवाले—कैलास पर्वत को झकझोरने वाले रावण को मारनेवाले श्रीहरि को
दिनदहाड़े मोहनवाले—दिनदहाड़े सरेआम अहल्या को मोहनेवाले इंद्र के पुत्र—अर्जुन

अनुजों से—भाई बने कौरवों से
बैर बरतनेवाले—बैरता रखनेवाले श्रीहरि को
शिशु...दिखा जा—किशोरावस्था में ही मामा कंस की शिरा को भेदनेवाले श्रीकृष्ण को

2. अंधनृपाल—अंधा राजा (धृतराष्ट्र)
अंध...जीजा को—धृतराष्ट्र के सारे पुत्रों को मारनेवाले पांच पांडवों के जीजा कहलानेवाले श्रीकृष्ण को
पिता के...भाई ?
सिंधु—समुद्र
सिंधु...दिखा जा—समुद्र को मथने पर, जन्म लेनेवाली लक्ष्मी का पति कहलानेवाले श्रीकृष्ण को लिवा लाकर मुझे दिखा दे।

3. मंगल जननि—पवित्र वेदमाता
जल में—समुद्र के जल में
मंगल...लानेवाले—वेदों को चुराकर ले जानेवाले तम नामक राक्षस का पीछा कर उसे मार कर वेदों की रक्षा कर उन्हें लानेवाले श्रीकृष्ण को
भुजंग—साँप
भुजंग शयन—सर्प को ही अपना शयन बना लेनेवाले (श्री हरि)
नारि भंग—द्रौपदि का मानभंग
मंगल...रक्षक—द्रौपदी का मानभंग को रोककर उसकी रक्षा करनेवाले कृष्ण को मुझे दिखा जा

मोहन—आट

हरिमुखी हरिवाणि हरिवेणि हरिणाक्षि
हरि मध्य हरिगमनी ॥ प ॥

हरि के नंदन का सखा कहलाये अहेबल के
हरि को तू लिवा ला ॥ अ ॥

क्रीत शिरा के भाई के पिता के
परम सखा के सुत के
जेष्ठ भ्राता के पिता के पौत्र के ससुर को
संहार करनेवाले को बलि के
गुरु के सम्मुख ठाडे रहे वाहन के
अनुज पुत्र की रानी को
धूर्तता से चुरा ले जानेवाले के संहारक को
तरला तू मुझे दिखा जा ॥ 1 ॥

सोम के जनक की सति को धारक
रोम किले में रखनेवाले
कामिनी सति के शिशु के अनुज के कृपा कर को
भामा तू ला दिखा जा री ॥ 2 ॥

श्रुति का उद्धार कर भूमि को ढोकर जंगल के
पथ में संचार करनेवाले

अतिशय नरहरि वामन रूप के
पिता के मोहित रानी का
हतकर सत्य का पक्षी नग ढोनेवाले
पति व्रताओं को भंग कर
क्षिति में रावुत बने बाड
दादिकेशव को ला दिखा जा री ॥ 3 ॥

भाव : यह कीर्तन सतिपति भावभक्ति के अनुसंधान के रूप का है। ओर्व प्रियतमा अपने प्रियतम को लिवा लाकर दिखाने के लिए रिरियाकर अनुरोध करने के तंत्रशैली का प्रयोग यहाँ किया गया है।

अर्थ : हरिमुखी—चंद्रमुखी (हरि अर्थात यहाँ चंद्र है)
हरिवाणि—शुकवाणि अथवा पिकवाणि (हरि शब्द के लिए तोता, कोयल का अर्थ भी है)
हरिवेणि—सर्पवेणि (हरि के लिए सर्प शब्द का अर्थ भी निकलता है)
हरिणाक्षि—हिरन के समान आँखवाली
हरि मध्य—सिंह के समान कमर वाली (हरि के लिए सिंह अर्थ भी निकलता है)
हरिगमनी—गजमगनी (हरि के लिए हाथी शब्द का अर्थ भी निकलता है)

1. क्रीत शिरा—गनपति (हाथी का भाड़े का मुख धारण करने के कारण)
भाई के—षण्मुख के
पिता के—पिता ईश्वर
परमसखा—मित्र श्री हरि
सुत—मन्मथ
जेष्ठ भ्राता—ब्राह्म का
पिता—पिता श्री हरि
पौत्र—पौत्र अनिरुद्ध (कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध)
ससुर का—बाणासुर (अनिरुद्ध बाणासुर की पुत्री उषा से

विवाह करता है)
गुरु—शुक्र
सम्मुख ठाढे वाहन—सूर्य का
अनुज पुत्र—सुग्रीवन की
रानी—रमा को
धूर्तता से चुरा ले जानेवाले—वाली का
संहारक को—राम को

2. सोम का—चंद्र का
जनक—सागर का
सति—गंगा
धारक—शिव
रोम किले में रखनेवाले—वायु के
कामिनिसति के—अंजना के
शिशु के—आंजनेय (अर्थात यहाँ भीम का अर्थ लेना चाहिए भीम भी वायुपुत्र ठहरा)
अनुज के कृपा कर—भीम का भाई अर्जुन पर कृपादृष्टि रखनेवाला कृष्ण

3. श्रुति का उद्धार कर—मत्स्यावतार (श्रुति अर्थात वेद)
भूमि को ढोकर—वराहवतार
जंगल के पथ में संचार करनेवाले—रामावतार
अतिशय नरहरि—नरसिंहावतार
वामन रूप के—वामनावतार (वामन अर्थात कुब्ज या नाटा)
पिता के...हतकर—परशुरामावतार (पिता की आज्ञा पर माता की हत्या की)
नग ढोनेवाले—कूर्मावतार
पतिव्रताओं को भंग कर—बौद्धावतार
क्षिति में रावुत बने—कल्क्यवतार

भैरवी—आटताल

सुनरी रमणि मोहन शुभकाय को
अमरवंदित रवि शतकोटि तेज को
विमल चरित्र से शोभित श्रीकृष्ण को
कमलवादना तू दिखा री ॥ प ॥

मुख वासिनी के पति के निजबंधु
माता के पिता की पत्नी का धारक
स्त्री के सुत के हाथों शापित का
दायादी के पुत्र का
सायक तीव्रता से आते देखकर
मायपति भूमि को धसाकर अपने
समधी के शिर का रक्षक
राय को ला दिखा जा ॥ 1 ॥

द्वि जिह्वाधारी का भंजित
पर चढ़कर आनेवाले के पिता का आवास गिरि को
लीला ही से उखाड़नेवाले धीर को
युद्ध में मार गिरानेवाले को
लोललोचना की माता का पुत्र का अणुग के
शीर्षशक्ति को सीना तानकर अपनों की

रक्षा करनेवाले दाता देव को
सुन्दरी तू बुला ला जा ॥ 2 ॥

अग्नि में जन्मित के निज अनुजा का
वस्त्र पकड़े खल के भ्राता की अनुजा के
वर का शिर छेदित धीर के
गुरु से जन्म लेनेवाले के
शर से बचाकर अपने दासर्ग को प्रतिदिन
बुलाकर अभय प्रदान कर कृपा कर पालनहार
उरगगिरि के वेंकटादिकेशव को
नागरि तू बुला ला जा ॥ 3 ॥

भाव : सतिपति भाव के भगवद् अनुसंधान का यह कीर्तन है। पंथजोही विरहिणि दु:ख को असहनीय जानकर अपने पथिक कृष्ण को बुला लाने के लिए सखि ओर्व से अनुरोध करने की शैली के तंत्र का प्रयोग यहाँ प्रस्तुत है।

अर्थ : मोहक शुभ काय को—मन मोहनेवाले सुंदर शरीर धारी को
अमर वंदित—देवताओं से पूजित, वंदित
रवि शतकोटिते का—शत कोटि सूर्य की कांति से युक्त
विमल चरित—शुद्ध चरित्र वाला
कमलवदना—कमल के समान मुखवाली

1. मुख वासिनी—सरस्वती
पति के—ब्राह्म के, निजबंधु के—मन्मथ के
माता—लक्ष्मी के, पिता—समुद्रराजा
पत्नि का—पत्नि गंगा का
धारक—शिव की, स्त्री का—पार्वती का
सुत के हाथों—गणपति के हाथों, शापित—चंद्र
दायादि का—सूर्य का

पुत्र—कर्ण का, सायक—सर्पास्त्र
मायापति—कृष्ण
समधि के—अर्जुन (अपनी बहन सुभद्रा का पति अर्जुन अर्थात बहनोई)

2. द्वि जिह्वाधारी—सर्प को
भंजित—खानेवाला मोर
पर चढ़कर आनेवाले—षण्मुख
पिता—ईश्वर, आवास गिरि—कैलास पर्वत
लीला ही...धीर को—रावण को
युद्ध में मार गिरानेवाले को—राम को
लोललोचना के—तल्लीन अथवा चलनभरि नयनवाली सीता के
माता का—भूदेवी का
पुत्र—नरकासुर का अणुग-पुत्र भगदत्त
शीर्षशक्ति को—वराहास्त्र
सीना तानकर—मार्ग रोककर (श्रीकृष्ण)

3. अग्नि में जन्मित के—दृष्टद्युम्न
निज अनुजा—द्रौपदी
वस्त्र पकड़े खल—दु:शासन
भ्राता की—दुर्योधन की
अनुजा—दुश्यले, वर—पति जयद्रथ (सैंधवन)
वर का...धीरके—अर्जुन के
गुरु से जन्म लेनेवाले के—अश्वत्थामा के
शर से बचाकर—नारायणास्त्र की पकड़ से बचाकर
उरगगिरि के—शेषगिरि के (तिरुपति)

सावेरि—आटताल

ऐणनयनि ऐणभोज मध्यला दिखा
ऐणांक बिंब मुखि
ऐणवैरि के वैरि के शिर कुचयुगे लिवा ला
ऐणांकधर के सखा को ॥ प ॥

शीत की पुत्री की जननी के दामाद का तनय को
मोर के वैरी को
बाँचकर भक्षण करने न देकर झपटकर खानेवाले के भाई का
पालन करनेवाले के सुत को
युद्ध में सर धड़ से विच्छेद करनेवाले धीर के यहाँ
लगाम को धरनेवाले
भूमि के गुहार को सुनकर खल उत्तमांग का
सिरच्छेदन करनेवाले को दिखा जा ॥ 1 ॥

चौबीस नामों में सात को
बिना चुके पुकार कर घटाने से
आनेवाले आठवें संबोधन के नाम में
रहनेवाले आखरी अक्षर का
स्वामी जयदरस के संग जनमी
कालेवर्ण की देहवाली

पिता के सखा का पुत्र ब्राह्म के
बप्पा को दिखा जा ॥ 2 ॥

विशालनेत्री बाला अपनी स्वामी की बातें सुन
दृढ़ता से लौटकर
क्रोधोन्मेष में दिए शाप को पाने के क्षण से
कही हुई अवधी के पार होने से
सर्वसेना को रणमध्य में हराकर
जकड़े सारे गायों को
त्वरिता से अपने पुर को हाँक लानेवाले धीर के
स्वामी को दिखा मुझे ॥ 3 ॥

सुरों के वाद्य से नामांकित के उदर से जन्मे
उरग के फूफा के पुत्र के
अग्रज बंधु को लपेटकर भक्षण किए बिना पिता का
भक्षण करनेवाले धीर को
रणरंग में ध्वज का लांछन बनानेवाले के
कुवरों का संहार करनेवाले की
वरमाता के संग जन्मे धीर को
ललना मझे दिखा जा ॥ 4 ॥

तीन मार्ग में रहनेवाली स्त्री के पति का
वैरी के अग्रज बंधु को
तीन पर एक की उक्ति के सार को ही चुराकर
वारधि में प्रवेश करनेवाले का
अन्य रूप में जन्म लेकर खल को मार गिराकर
धरिणि सुरों को सौंपनेवाले को

धीर कागिनेलेयादिकेशव के
रघुवीर को लाकर दिखा जा ॥ 5 ॥

भाव : प्रस्तुत कीर्तन सतिपति भाव के भगवत् अनुसंधान का है। प्रकार ओर्व प्रोषित- पति का अपनी प्रियतम श्रीकृष्ण (विष्णु) लिवा लाने हेतु अपनी सखी से अनुनय करने की शैली तंत्र प्रयोग प्रस्तुत है।

अर्थ : ऐणनयनि—हरिण की आँखों वाली
ऐणभोज मध्यला—हरिण को खानेवाले सिंह के समान क्षीण कटिव
ऐणांक बिंब मुखि—हरिण के बिंब के समान मुखवाली
ऐणवैरि के वैरि के—हरिण का वैरी सिंह का वैरी ठहरे हाथी के
शिरकुचयुगे—कुंभस्थल समान स्तनद्वयधारी
ऐणांकधर के सखा को—चंद्र का धारक शिव का मित्र विष्णु को

1. शीत की पुत्री की—हिमवंत की पुत्री पार्वती की
जननी के—मैनादेवी के
दामाद के—शिव के
तनय को—पुत्र षण्मुख को
मोर के वैरी को—सर्प को
बाँचकर भक्षण...खानेवाले के—सर्प को बटोरकर खानेवाले मोर
...रा करने अवकाश ही न देकर झपटकर ऊपर उठा ले ज
खानेवाले गरुड़ के
भाई का—अरुण का
पालन करनेवाले—सूर्य, सुत को—कर्ण को
युद्ध में...धीर के—युद्धभूमि में मारनेवाले अर्जुन
लगाम...धरनेवाले—घोड़े का लगाम पकड़कर सारथी बननेवाले
भूमि के गुहार...सिरच्छेदन करनेवाले को—भूमि पर के लोग
आर्त अनुनय को सुनकर दुष्टजनों को संहार कर उनके सिरो
च्छेदन करनेवाले श्रीकृष्ण को

2. चौबीस नामों में—केशवादि कृष्ण पर्यंत रहनेवाले विष्णु के चौबीस नामों में (केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विंष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, ऋषिकेश, पद्मनाभ, दामोदर, संकर्ष्णण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पुरुषोत्तम, अधोक्षज, नारसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, श्रीहरि, श्रीकृष्ण)
सात को...घटाने से—सात को घटाने के पश्चात् आनेवाला आठवाँ नाम वा़मन
रहनेवाले आखरी...स्वामी—वामन के नाम का आखरी अक्षर न से शुरू होनेवाले नरक का स्वामी यमधर्मराज
कालेवर्ण की देहवाली के—यमर्धराज के संग जन्मी कालेवर्ण की देहवाली (यमुना) के
पिता—सूर्य का
सखा—कमल
पुत्र नामक बोम्म के—कमलोद्भवी ब्राह्म के
बोप्प को—पिता बने विष्णु को

3. विशालनेत्री बाला—अनिमिष बनी ऊर्वशी
अपनी स्वामी की—देंवेन्द्र की
बातें सुन दृढ़ता से लौटकर...पाने के क्षण से—उर्वशी कामातुरता से अर्जुन के प्रति लाख अनुनय कऱ्ने पर भी, तुम मेरी माता के समान हो कहते हुए अर्जुन मना करने से कुपित होकर, उर्वशी 'तुम स्त्रीरूप को पा जाओ' कहकर शाप देती है। यह कथावृत्तांत यहाँ प्रस्तुत है
कही हुई अवधी...होने से—अज्ञातवास की अवधि पार होने पर
सर्वसेना को रणमध्य में...हाँक लानेवाले धीर के स्वामी—उत्तरगोग्रहण हेतु आए हुए दुर्योधन के पक्ष की सारी सेना को ध्वंस करके, उनके द्वारा बंधित सारे गायों को छुड़ाकर विराटनगर की ओर हाँक ले आनेवाले अर्जुन के स्वामी श्रीकृष्ण को

4. सुरों के वाद्य से नामांकित—अनकदुंदुभि का नामधारी वासुदेव
उदर से...उरग—वासुदेव के उदर से जन्मा बलराम के
फूफा के पुत्र—कुंती का पुत्र धर्मराज के

धीर कागिनेल्लेयादिकेंशव के
रघुवीर को लाकर दिखा जा ॥ 5 ॥

भाव : प्रस्तुत कीर्तन सतिपति भाव के भगवत् अनुसंधान का प्रकार और प्रोषित- पति का अपनी प्रियतम श्रीकृष्ण (वि लिवा लाने हेतु अपनी सखी से अनुनय करने की शैल प्रयोग प्रस्तुत है।

अर्थ : एणनयनि—हरिण की आँखों वाली
एणभोज मध्यला—हरिण को खानेवाले सिंह के समान क्षीण
एणांक विंब मुखि—हरिण के बिंब के समान मुखवाली
एणवैरि के वैरि के—हरिण का वैरी सिंह का वैरी ठहरे हाथ
शिरकुचयुगे—कुंभस्थल समान स्तनद्वयधारी
एणांकधर के सखा को—चंद्र का धारक शिव का मित्र विष

1. शीत की पुत्री की—हिमवंत की पुत्री पार्वती की
जननी के—मैनादेवी के
दामाद के—शिव के
तनय को—पुत्र षण्मुख को
मोर के वैरी को—सर्प को
बाँचकर भक्षण...खानेवाले के—सर्प को बटोरकर खानेवाले
ऐसा करने अवकाश ही न देकर झपटकर ऊपर उठा ले
खानेवाले गरुड़ के
भाई का—अरुण का
पालन करनेवाले—सूर्य, सुत को—कर्ण को
युद्ध में...धीर के—युद्धभूमि में मारनेवाले अर्जुन
लगाम...धरनेवाले—घोड़े का लगाम पकड़कर सारथी बननेव
भूमि के गुहार...सिरच्छेदन करनेवाले को—भूमि पर के ह
आर्त अनुनय को सुनकर दुष्टजनों को संहार कर उनके
च्छेदन करनेवाले श्रीकृष्ण को

2. चौबीस नामों में—केशवादि कृष्ण पर्यंत रहनेवाले विष्णु के चौबीस नामों में (केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, ऋषिकेश, पद्मनाभ, दामोदर, संकर्ष्णण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पुरुषोत्तम, अधोक्षज, नारसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, श्रीहरि, श्रीकृष्ण)

सात को...घटाने से—सात को घटाने के पश्चात् आनेवाला आठवाँ नाम वामन

रहनेवाले आखरी...स्वामी—वामन के नाम का आखरी अक्षर न से शुरू होनेवाले नरक का स्वामी यमधर्मराज

कालेवर्ण की देहवाली के—यमर्धराज के संग जन्मी कालेवर्ण की देहवाली (यमुना) के

पिता—सूर्य का

सखा—कमल

पुत्र नामक बोम्म के—कमलोद्भवी ब्राह्म के

बोप्प को—पिता बने विष्णु को

3. विशालनेत्री बाला—अनिमिष बनी ऊर्वशी

अपनी स्वामी की—देवेन्द्र की

बातें सुन दृढ़ता से लौटकर...पाने के क्षण से—उर्वशी कामातुरता से अर्जुन के प्रति लाख अनुनय करने पर भी, तुम मेरी माता के समान हो कहते हुए अर्जुन मना करने से कुपित होकर, उर्वशी 'तुम स्त्रीरूप को पा जाओ' कहकर शाप देती है। यह कथावृत्तांत यहाँ प्रस्तुत है

कही हुई अवधी...होने से—अज्ञातवास की अवधि पार होने पर

सर्वसेना को रणमध्य में...हाँक लानेवाले धीर के स्वामी—उत्तरगोग्रहण हेतु आए हुए दुर्योधन के पक्ष की सारी सेना को ध्वंस करके, उनके द्वारा बंधित सारे गायों को छुड़ाकर विराटनगर की ओर हाँक ले आनेवाले अर्जुन के स्वामी श्रीकृष्ण को

4. सुरों के वाद्य से नामांकित—अनकदुंदुभि का नामधारी वासुदेव

उदर से...उरग—वासुदेव के उदर से जन्मा बलराम के

फूफा के पुत्र—कुंती का पुत्र धर्मराज के

धीर कागिनेलेयादिकेशव के
रघुवीर को लाकर दिखा जा ॥ 5 ॥

भाव : प्रस्तुत कीर्तन सतिपति भाव के भगवत् अनुसंधान का है। यथा प्रकार ओर्व प्रोषित- पति का अपनी प्रियतम श्रीकृष्ण (विष्णु) को लिवा लाने हेतु अपनी सखी से अनुनय करने की शैली तंत्र का प्रयोग प्रस्तुत है।

अर्थ : ऐणनयनि—हरिण की आँखों वाली
ऐणभोज मध्यला—हरिण को खानेवाले सिंह के समान क्षीण कटिवाली
ऐणांक बिंब मुखि—हरिण के बिंब के समान मुखवाली
ऐणवैरि के वैरि के—हरिण का वैरी सिंह का वैरी ठहरे हाथी के
शिरकुचयुगे—कुंभस्थल समान स्तनद्वयधारी
ऐणांकधर के सखा को—चंद्र का धारक शिव का मित्र विष्णु को

1. शीत की पुत्री की—हिमवंत की पुत्री पार्वती की
जननी के—मैनादेवी के
दामाद के—शिव के
तनय को—पुत्र षण्मुख को
मोर के वैरी को—सर्प को
बाँचकर भक्षण...खानेवाले के—सर्प को बटोरकर खानेवाले मोर को ऐसा करने अवकाश ही न देकर झपटकर ऊपर उठा ले जाकर खानेवाले गरुड़ के
भाई का—अरुण का
पालन करनेवाले—सूर्य, सुत को—कर्ण को
युद्ध में...धीर के—युद्धभूमि में मारनेवाले अर्जुन
लगाम...धरनेवाले—घोड़े का लगाम पकड़कर सारथी बननेवाले
भूमि के गुहार...सिरच्छेदन करनेवाले को—भूमि पर के लोगों का आर्त अनुनय को सुनकर दुष्टजनों को संहार कर उनके सिरों का विच्छेदन करनेवाले श्रीकृष्ण को

2. चौबीस नामों में—केशवादि कृष्ण पर्यंत रहनेवाले विष्णु के चौबीस नामों में (केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, ऋषिकेश, पद्मनाभ, दामोदर, संकर्ष्णण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पुरुषोत्तम, अधोक्षज, नारसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, श्रीहरि, श्रीकृष्ण)
सात को...घटाने से—सात को घटाने के पश्चात् आनेवाला आठवाँ नाम वामन
रहनेवाले आखरी...स्वामी—वामन के नाम का आखरी अक्षर न से शुरू होनेवाले नरक का स्वामी यमधर्मराज
कालेवर्ण की देहवाली के—यमर्धराज के संग जन्मी कालेवर्ण की देहवाली (यमुना) के
पिता—सूर्य का
सखा—कमल
पुत्र नामक बोम्म के—कमलोद्भवी ब्राह्म के
बोप्प को—पिता बने विष्णु को

3. विशालनेत्री बाला—अनिमिष बनी ऊर्वशी
अपनी स्वामी की—देवेन्द्र की
बातें सुन दृढ़ता से लौटकर...पाने के क्षण से—उर्वशी कामातुरता से अर्जुन के प्रति लाख अनुनय करने पर भी, तुम मेरी माता के समान हो कहते हुए अर्जुन मना करने से कुपित होकर, उर्वशी 'तुम स्त्रीरूप को पा जाओ' कहकर शाप देती है। यह कथावृत्तांत यहाँ प्रस्तुत है
कही हुई अवधी...होने से—अज्ञातवास की अवधि पार होने पर
सर्वसेना को रणमध्य में...हाँक लानेवाले धीर के स्वामी—उत्तरगोग्रहण हेतु आए हुए दुर्योधन के पक्ष की सारी सेना को ध्वंस करके, उनके द्वारा बंधित सारे गायों को छुड़ाकर विराटनगर की ओर हाँक ले आनेवाले अर्जुन के स्वामी श्रीकृष्ण को

4. सुरों के वाद्य से नामांकित—अनकदुंदुभि का नामधारी वासुदेव
उदर से...उरग—वासुदेव के उदर से जन्मा बलराम के
फूफा के पुत्र—कुंती का पुत्र धर्मराज के

अग्रज बंधु—भीम

लपेटकर भक्षण...धीर को—अरण्य में भीम के देह को लपेटने पर भी उसे बिना भक्षण किए, उसके पिता वायु का भक्षण किए (यह प्रतीती है कि सर्पों का आहार धूल और हवा है) सर्प को रणरंग में ध्वज का लांछन बनानेवाले—दुर्योधन (जिसके रणरंग के ध्वज का लांछन सर्प है)

कुवरों का संहार करनेवाले—दुर्योधन के पुत्रों को मारनेवाला अभिमन्यु

वरमाता के...धीर को—माता सुभद्रा के संग जन्मे श्रीकृष्ण को

5. तीन मार्ग में रहनेवाली स्त्री—त्रिपथगामिनी गंगा का

पति का—सागर का

वैरी—लक्ष्मण

अग्रजबंधु को—राम को

तीन पर एक की उक्ति...प्रवेश करनेवाले का—चार वेदों (तीनअएक) को चुराकर सागर में जा छिपे सोमक नामक राक्षस का

अन्य रूप में जन्म लेकर...सौंपनेवाले को—मत्स्यावतार का अवतरण करके राक्षस को मार गिराकर वेदों को ब्राह्मज्ञानियों को प्रदान करनेवाले श्रीकृष्ण

यरकुल कांबोदि—त्रिपुड

हे ललितांगि भला कैसे मन दे बैठी
असमान ग्वाले को कुलहीन अकुल को ॥ प ॥

पुत्र को देवर बने, पुत्री का पति बने
पुत्री का दामाद बन, दामाद का दामाद बने ॥ 1 ॥

पुत्री के पुत्र का देवर बनकर मामा का
कारस्थान जानकर संहार किये कुलकंटक गोप को ॥ 2 ॥

सास का वल्लभ बनकर भृत्यरियों का सेवक बनकर
चित्त मोहनेवाले चेन्न आदिकेशव को ॥ 3 ॥

भाव : यह पौराणिक संबंधों की आवृत्ति (वावेवरसे) के आधार पर रचित श्री हरि की लीलाओं को कहनेवाली निंदास्तुति की लघु पहेली (मुंडिगे) है। 'कौन बड़ा गृहस्थ, सभ्यस्थ समझकर, ले देकर एक मवेशी चरानेवाले गोपल को मोहकर, उससे विवाह किया?' कहते हुए लक्ष्मी से पूछने के बहाने लक्ष्मीपति के सारे मूलचूलों को शोध कर, छानकर सम्मुख रखनेवाले इस अद्भुत भाव को देख भला देवी लक्ष्मी अचरज से भर गयी या नहीं, पता नहीं लेकिन, पाठकगण मात्र इसे पढ़कर अचरज से भरकर आँखें फाड़े-फाड़े, सर खुजाते धूल चाटते रह जाने में कोई कोताही नहीं। क्योंकि इस उलझे पड़े संबंधों

की आवृत्ति को उसके मंत्र को जाने बिना, उसके मूल के तंत्र को समझ पाना दुसाध्य ही है। कनक को छेड़ो नहीं, छेड़ कर लड़ो नहीं नामक कहावत प्रसिद्ध है ही। पूर्व के पंडितों के गले में अटका ग्रास बने इन लघु पहेली (मुंडिगे) का रचना कौशल, कवि कनक की जादूगरी, यहाँ आबद्ध है।

अर्थ : गोल्ल—गोपाल, गोवल
असमान—जो समान नहीं है

1. पुत्र को देवर बने—नरकासुर और सीता माता भूदेवी के संतान है। भूदेवी विष्णु की पत्नी भी ठहरी। तब नरकासुर विष्णु के लिए पुत्र भी बनता है। रामावतार में सीता से विवाह करने के कारण नरकासुर के लिए देवर का संबंध भी बनता है।
पुत्री का पति बने—भूदेवी की पुत्री सीता, विष्णु के लिए भी पुत्री ही ठहरती है। रामावतार में सीता से विवाह करने के कारण पति बनता है।
पुत्री का दामाद बन—विष्णु के पाद मे गंगा उद्भवित होने के कारण, विष्णु के लिए पुत्री बनती है। वह समुद्रराजा की पत्नी बनती है। सागर की पुत्री लक्ष्मी का पाणिग्रहण विष्णु करने के हेतु, सागर के लिए वह दामाद बनता है। तब पुत्री ठहरी गंगा के लिए भी वह दामाद बनता है।
दामाद का दामाद बने—विष्णु की पुत्री गंगा से सागर विवाह करने के कारण सागर विष्णु का दामाद बनता है। सागर की पुत्री लक्ष्मी को स्वयं वह विवाह करने के कारण दामाद बने सागर के लिए वह दामाद बनता है।

2. पुत्री के पुत्र का देवर बनकर—लक्ष्मी और चंद दोनों सागर के संतान ठहरे। विष्णु पुत्री सागर की पत्नी होने के कारण चंद्र उसके लिए भी पुत्र बनता है। चंद्र की सहोदरी लक्ष्मी से विष्णु विवाह करने के कारण विष्णु चंद्र के लिए देवर बनता है।
मामा का...कुलकंटक गोप—मामा कंस की हत्या करनेवाला कुलकंटक कृष्ण

3. सास का वल्लभ बनकर—विष्णु रामावतार में सीता से विवाह करने के कारण सीता की माता ठहरी भूदेवी सास बनती है। लेकिन भूदेवी विष्णु के लिए पत्नी भी होने के कारण सास का पति बनता है। भृत्यरियों का सेवक बनकर—पांडवों का सेवक बनकर उनका छकड़ा हाँकने का काम करने वाला कृष्ण।

आनंद भैरवी—आटताल

लिवा ला हे कामिनी कमलजपित को
हरि को दिखा जो सासिर नामाधारी को ॥ प ॥

भूल नहीं सकती अपने प्राणवल्लभ को
दिनकर कोटि किरण प्रकाशवान को ॥ अ ॥

ब्राह्न कपाल को धरा पर मिटानेवाले को
भाई भाइयों को आपस में लड़वानेवाले को
...
... ॥ 1 ॥

नगराज वैरी के पुत्र के समधी को
नग पीठ पर धारे धरा पर राज करनेवाले
नग उखाड़नेवाले का शिरच्छेदक को
नगसुता पति के काया में बसे हुए को ॥ 2 ॥

पाताल में उतरकर भूमि को चुरा ले गए घोर
किरात का पीछा कर सति को जीतनेवाला
बोल चुरानेवाले की कुक्षि चीरनेवाले को
माता को जबान देनेवाले के मामा को त्वरितता से ॥ 3 ॥

आँखों से सुननेवाली के शत्रु का स्वामी
आँखों से जानकर कल्पना कर सके जिसे
आँख को चीरकर दान को माँगनेवाले
तलुवे की आँख को पैर में मसल देनेवाले को ॥ 4 ॥

मंदगिरि को निरायास उठानेवाले को
झुलस जाएँगे समझ गायों की रक्षा करनेवाले
मवेशियों का चरवाहे को मन्मथ के जनक को
जनक प्रसन्न बाडदादिकेशव को ॥ 5 ॥

भाव : सतिपति भाव के भगवद्अनुसंधान के इस कीर्तन का तात्पर्य यह है कि प्रोषित-पति का ओर्व अपने प्रियतम को लिवा लाने कहते हुए अपने सखि से अनुनय विनय करने की तंत्रशैली का प्रयोग यहाँ प्रस्तुत है।

अर्थ : कमलजपित—ब्राह्न का पिता (विष्णु)
दिनकर—सूर्य

1. ब्राह्न कपाल...मिटानेवाले को—ब्राह्न के पाँचवें सर का विच्छेदन जब शिव करता है तब ब्राह्न का कपाल उसके हाथ से चिपक जाने से, उस समय विष्णु की कृपा से काशी में स्नान करने पर वह छूटकर गिर जाने की कथा यहाँ प्रस्तुत है
भाई...लड़वानेवाले को—कौरव एवं पांडवों में युद्ध की अग्नि लगानेवाले कृष्ण को

2. नगराज—मैनाक पर्वत
नगराजवैरी—इंद्र, पुत्र—अर्जुन
समधी को—कृष्ण को

नग पीठ पर...राज करनेवाले—मंदर पर्वत को धारण किए हुए कूर्मावतारी कृष्ण को
नग उखाडनेवाले—कैलास पर्वत को हिलाने वाला रावण
शिरच्छेदक को—राम को
नगसुता—हिमवंत की पुत्री पार्वती
नगसुतापति—ईश्वर
काया में—शरीर में अर्थात हृदय में

3. पाताल में उतरकर...सति को जीतनेवाला—भूमि को चुराकर पाताल को ले जानेवाले हिरण्याक्ष का पीछा करके भूमि को वापस ले आनेवाले वाराहावतारि विष्णु
बोल चुरानेवाले...चीरनेवाले को—वेद को चुरानेवाले सोमक का संहार करनेवाले मत्स्यावतारी विष्णु
माता को जबान देनेवाले—अपनी माता सुभद्रा को वत्सला का लाने की जबान देनेवाले अभिमन्यु
मामा को—कृष्ण को

4. आँखों से सुननेवाले—सर्प (मान्यता यह है कि साँप के कान नहीं होते, वह अपनी आँखों से ही सुनता है)
शत्रु का—गरुड़ का
आँखों से जानकर...जिसे—बाह्य चक्षुओं से जिसे देख नहीं सकते अर्थात भीतरी आँखों से मात्र दिखनेवाले विष्णु को
आँख को चीरकर...माँगनेवाले—बलि से दान माँगते समय, बलि के गुरु शुक्राचार्य की एक आँखों को चीरने की कथा है
तलुवे की आँख...मसल देनेवाले को—भृगु मुनि, विष्णु द्वारा अपना अपमान देखकर, विष्णु से अपना गौरव न होता पाकर, उसे पैर से लात मारता है, तब बिना क्रोध किए, आपके पैर को पीड़ा हुई है कहते उसे सहलाने के बहाने, उसके तलुवे में स्थित आँख को—

मुनि के कोप के लिए कारण यह आँख ही है जानकर—मसल डालने की कथा

5. झुलस जाएँगे...रक्षा करनेवाले—गायों की रक्षा करनेवाले (एक बार गोवर्धन पर्वत पर आग के भड़कने से, उस आग में झुलसने से श्रीकृष्ण ही बचाता है, यह कथा प्रचलित है)

भैरवी त्रिपुड

भव भय विनाश भो भक्तविलास भो
पापविनाश भो बाडद रंगेश भो ॥ प ॥

हरि के सुत को अभय दिया
हरि के पुत्र को मार दिया
हरि कहने पर हरिरूप धारा
हरि में छिप गया फिर
हरि का अग्रज कोटि तेज को
हरि का वदन नामक ॥ 1 ॥

शिव की पुत्री का संग करके फिर
शिव की पुत्री को ससुर को दिया
शिव की बाधा से गोकुल को
शिव के कर में धरा दिया
शिव के धनु का खंडन कर फिर
शिव के शिरा पर चढ़ गया
शिव का भोजनवाहन सुत को
शिव का प्रतिपाल नामक ॥ 2 ॥

कमल को दोगज किया
कमल के अनुरोध पर तब

कमल में ब्राह्मांड दिखाया
कमलधर तुम हो मानकर
कमल को चुराए चोर को मार कर
कमल को ले आया
कमलमुखि के पालनहार कागिनेले
विमल आदिकेशव नामक ॥ 3 ॥

भाव : यह एक ही शब्द के नाना अर्थों में हरि की महिमा का गान करनेवाला कीर्तन है।

अर्थ : 1. हरि के सुत को अभय दिया—इंद्रपुत्र अर्जुन अथवा सूर्यपुत्र सुग्रीव को अभय प्रदान किया (हरि—इंद्र, सूर्य)
हरि के पुत्र को मार दिया—सूर्यपुत्र कर्ण को अथवा इंद्रपुत्र वाली को मारा
हरि कहने पर—प्रह्लाद के हरि स्मरण करने पर
हरिरूप धारा—नर (सिंह) अवतार धारण किया
हरि में छिप गया—सूर्य में छिप कर सूर्यनारायण बना
हरि का अग्रज—वामन अथवा उपेन्द्र का भाई (सूर्य)
हरि का वदन—हय वदन (हरि-अका)

2. शिव की पुत्री का संग करके—सागर की पुत्री लक्ष्मी का पाणिग्रहण करके
(शिव—समुद्र)
शिव की पुत्री को ससुर को दिया—गंगा को ससुर ठहरे सागर को प्रदान किया (वामनावतार में उसके एक पाद के छूने से गंगा धरा पर उतर आने की कथा यहाँ प्रस्तुत है) शिव—जल, गंगा
शिव की बाधा से—देवेन्द्र की बाधा से विचलित होकर (शिव—इंद्र)
गोकुल को शिव के—गोवर्धन पर्वत को (शिव—पर्वत)

शिव के कर में धरा—गोवर्धन पर्वत को हाथ में उठाकर धारण किया
शिव के धनुष का खंडन कर—शिव के धनुष्य का भंग कर सीता का हाथ ग्रहण किया
शिव के शिरा पर चढ़ ठाडा—कालिंग सर्प के फन पर चढ़कर ठहरा (शिव—सर्प)
शिव का भोजनवाहन सुत को- सर्प को अपना आहार बनानेवाले गरुड आरूढ़ होकर आनेवाले विष्णु का पुत्र ब्राह्

3. कमल को द्वि गज किया—भूमि को दो गज में नाप डाला (कमल—भूमि)
कमल के अनुरोध पर तब—कमलमुखि के अनुरोध करने पर
कमल में ब्राह्मांड दिखाया—मुख में विश्व का दर्शन कराया (यशोदा को)
कमल—मुख
कमलधर तुम को मानकर—भूदेवी का पति तुझे जानकर
कमलमुखि के पालनहार—द्रौपदी का संरक्षक

पूर्वी कल्याणि—आट

बिना भूले स्मरण कर चिन्मय का हरिनारायण अच्युत का ॥ प ॥

पुत्री से स्वयं विवाह किया
पुत्री का पुत्र के पौत्र को
पुत्री के पति पर सोनेवाले चाणाक्ष का
पुत्री के ससुर के देवर का ॥ 1 ॥

पिता को स्वयं पिता बने
पिता को माता लानेवाले का
पिता से पूर्व में स्वयं जन्मे
पिता को पिता को लानेवाले का ॥ 2 ॥

राम के समरोद्धाम को सुगुणाभि
राम के सीता नायक का
राम को जन्मे कमलदळाक्ष का
प्रेम से नेलेयादिकेशव का ॥ 3 ॥

कल्याणि—आदिताल

ज्ञानीजन तुम कहो बंधु यह भावउद्धयार्थ है ॥ प ॥

सर्वजनों के लिए सुसम्मत है यह नाम ॥ अ ॥

चित्ता नक्षत्र में जन्मे की बहू
मृत्यु को भानकर भेजनेवाले को
उत्तरायण ससुर की पुत्री को मोहनेवाले को
घड़ी गुजर नहीं रही मुझे दिखा हे तरलाक्षि ॥ 1 ॥

वहाँ बंधु अग्रज के हाथों
निर्वस्त्र को बुलवाकर मनवा लिया
भीगे खेत में वैदर्भकुँवर की अनुजा को उठाकर
सुहागिन बनाकर पौत्र को पानेवाले को ॥ 2 ॥

अग्नि के दाह निवारण का सहायक
धरा में तीनों को जीतकर
भूरि वार्ता को पानेवाले महा महिम को
दिखा जा मुझे कागिनेलेयादिकेशव को ॥ 3 ॥

भाव : यह श्रीकृष्ण की महिमा लीलाओं को उलटबाँसी शैली में दिखा जाने वाली 'मुंडिगे' पहेली है

अर्थ : भावउद्धयार्थ—उलटबाँसी

1. चित्ता नक्षत्र में...भेजनेवाले को—पांडुराजा की बहू द्रौपदी को कुंती के साथ न रखते हुए उसे वनवास के लिए भेजनेवाले
   उत्तरायण...मोहनेवाले को—सूर्य की पुत्री कालिंदी को चाहकर पाणिग्रहण करनेवाले

2. वहाँ बंधु...मनवा लिया—सुभद्रा को अर्जुन को देकर विवाह करने की इच्छा कृष्ण को थी, लेकिन बलराम यह चाहता था कि उसे दुर्योधन को दे। इसीलिए कृष्ण अर्जुन से निर्वस्त्रधारी का (जैन संन्यासी) वेश धरवाता है, उसे लिवा लाने के लिए बलराम को ही फुसलाकर भेजने पर, उसे घर लिवा लाकर, उसके उपचार के लिए बहन सुभद्रा को ही नेमित करता है। अर्थात सुभद्रा अर्जुन के वश में होने हेतु बंधु बलराम को अत्यंत विनयपूर्णता से, चालाकी से मनवा लिया हुआ कृष्ण,
   यह भाव व्यक्त है।
   जुते खेत में...पौत्र को पानेवाले को—विदर्भ के भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी ठहरी। उसका भाई रुक्मि, अपनी बहन को कृष्ण को सौंपने की इच्छा न करके, उसे शिशुपाल को देने की ठानता है। कृष्ण उसे अपहरण कर लाने पर, पीछा किए रुक्मि को निरायुध बनाकर अंत में उसके ही वस्त्रों से हाथ-पैरों को बाँधकर, कृपाण से सर मुंडता है। रुक्मिणी और बलराम की बात मानकर उसे हत नहीं करता। रुक्मिणी की कोख से प्रद्युम्न जन्म लेता है, उसका पुत्र बनकर अनिरुद्ध जन्म लेता है। कारण कृष्ण का पौत्र अनिरुद्ध
   वैदर्भकुँवर—विदर्भ का राजा भीष्मक का पुत्र रुक्मि

3. अग्नि के...सहायक—अग्नि अपनी भूख और दाह को तृषित करने के लिए खांडव वन दहन के लिए कृष्णार्जुनों से सहायता माँगने का कथासंदर्भ।

धरा में...जीत कर—भीष्म, द्रोण, कर्णादियों को जीतनेवाले (अर्थात शिखंडी को सम्मुख रखते हुए भीष्म को, धर्मराज के मुख से 'अश्वत्थामोहत:' कहलवाकर द्रोण को, जन्म के राज को बताकर कर्ण को जीतनेवाले)

राग ?—ताल ?

री मानिनी ललना स्वयं क्यूँ नहीं आता
तू ही पूछताछ कर हम उभय के न्याय को ॥ प ॥

पुत्री का पुत्री बना पुत्री का दामाद बना
पुत्री के पति को जीजा ससुर का बनना सुनकर
मैं तेरे चरणों में आयी हूँ श्री हरि ॥ 1 ॥

वैरी को वैरी बना वैरी का सुत बना
वैरी पति को अपनी पुत्री देने का सुन
मैं तेरे चरणों में आयी हूँ श्री हरि ॥ 2 ॥

हाथी गिरने पर अपने ग्यान से उठेगा
कुछ करने पर भी उसका भाव छूटेगा नहीं
ज्ञानवंत कागिनेलेयादिकेशवराय रूठकर चल पड़ा क्या ॥ 3 ॥

राग—केदारगौळ

वारिज मुखि वारिजाक्षि वारिज गंधि वारिश दामाद को
इसी तरह तुम जाकर बुला ला मेरे प्राणाधार केशव मूर्ति को ॥ प ॥

नग वैरी अणुग बंधु पिता समधि के पहले जन्मे के अनुज के
सुंदर वस्त्र से मोहित सुरपुत्र वाजियनिव वैरी के दल को
...
अगणित आभरण दूँगी अंगजाग्नि के पीड़ा छुड़ा हे तरुणि ॥ 1 ॥

मिहिर नंदन के पिता के शत्रु के ससुर कुलनाम के
महि वन कृतिस्वामी के...
...
... ॥ 2 ॥

सुरभेद प्रथम दासी के नाम को जाजियस्वामी नखवैरी के
...
पालन के लिए...क्रोध में चीरनेवाले नरसिंह के बंधु को इसी क्षण
लिवा लाकर मुझसे मिला जा कागिनेलयादिकशव को ॥ 3 ॥

सुरटि—भापु ताल

मंगल आरति गाओ हे मानिनियो ॥ प ॥

अंधक अनुज का सुत के पिता को
मारनेवाले के शिर पर ठाडे
आनंद से पाए नंदना को
आमोद से धरे मुकुंद को ॥ 1 ॥

रथ चढ़कर सुरपथ में घूमनेवाले के
सुत को शाप देनेवाले को
क्रोध को रोके सति की जननी के सुत के
सतियों पर राज किए चतुर को ॥ 2 ॥

हरि के पुत्र का शिरच्छेदनेवाले के पिता के
अग्रजपुत्र के अनुज के पिता को
त्वरितता से भुजनेवाले के शिर पर नाटिऋत
वर कागिनेलेयादिकेशव को ॥ 3 ॥

भाव : 'वावेवरसे' अर्थात संबंधों की आवृत्ति के आड़े तिरछे मोड़ों से होकर गुजरती हुई इस कीर्तन का आशय सर्वोत्तम का गुणगान ही है

अर्थ : 1. अंधक—धृतराष्ट्र

अनुज का—पांडुराजा का, सुत—धर्मराज
पिता को—यम को, मारनेवाले—ईश्वर
शिर पर ठाडे—चंद्र
आनंद से पाए—समुद्र राजा के, नंदना को—लक्ष्मी को
आमोद से धरे मुकुंद को—संतुष्टता से पाणिग्रहण किए विष्णु को

2. रथ चढ़कर...घूमनेवाले के—सूर्य
सुत को—कर्ण को, शाप देनेवाले—परशुराम के
क्रोध को रोके—कोप को रोकनेवाले श्री राम के
सति की—सीता की, जननि के—भूदेवि के
सुत के—नरकासुर के
सतियों पर...चतुर को—16 हजार स्त्रियों पर राज करनेवाले कृष्ण को

3. हरि के पुत्र—सूर्य का पुत्र कर्ण
शिरच्छेदनेवाले के—शिरा को काटनेवाले अर्जुन के
पिता—पांडुराजा, अग्रजपुत्र के—धर्मराज के
अनुज के—भीम के, पिता के—पिता वायु को
त्वरितता से भुजनेवाले—सर्प के (काळिंग)
शिर पर...केशव को—सर्प के फन पर नाटक करनेवाले कृष्ण को ॥।॥
अनुभाव की निगूढ़ पहेलियाँ 'मुंडिगे'

राग ?—ताल ?

बोआई को जाने पर अचूक पानी बरस कर
बैल की रस्सी भीगी भीगा चमडे का रज्जू हो ॥ प ॥

बैल की रस्सी भीगी भीगा कर चमड़े का रज्जू—धोती के बँधे
बोआई के बीज भीगकर अंकुर फूट पड़े हो
बोया नहीं उगाया नहीं बित्ताभर कलगी डोले
नरम दाना आया चरने तोताराम अचम्भित मूक ठाडा हो ॥ 1 ॥

कागिनेले कनकदास की बिछायी यह पहेली
तौल मापकर बूझा नहीं तो भय्या आदिकेशव की सौं हो ॥ 2 ॥

भाव : सतत साधना की जुताई के बाद में बोआई आरंभ करने पर सिद्धि की वर्षा होकर, धोती के बँधे बोआई के बीज मिट्टी में पड़ने से पहले ही अंकुरित होकर, बढ़कर फल देता हुआ देखकर, बीजों का आस्वाद लेने आया तोताराम (परमात्मा) अचम्भित होने के दृश्य को यह पहेली प्रस्तुत करती है।

अर्थ : बैल की रस्सी—बैलों के गले बँधी रस्सी जिसे खींचकर हल को बाँधा जाता है।
चमडे का रज़्जू—चर्म से बनी रस्सी
धोती के बँधे—कमर में बँधे
बोआई के बीज—खेत में बोने के लिए धोती में बँधे बीज
बूझा नहीं तो—पहेली सुलझाया नहीं तो

सौराष्ट्र—भापुताल

मोतियों का फल काया (कच्चापन) धरने की
एक और विडंबना देखो
चित्र के फूल का मूँगा काया (कच्चाफल) बनने का
अर्थ को समझकर बूझो ॥ 1 ॥

भुने बीज को बोकर फसल न आने की काया
पहाड़ के सार को
छिलका रहित फल को धरे नहीं काटेगा ओर्व
जन्म से बाँझ का बेटा ॥ 2 ॥

सूखा वृक्ष चढ़कर फल कैरी को बेटा
अविश्राम भोज कर डाला
रण में सर कटकर रुंड के गिरने पर
शव उठकर नाचने लगा ॥ 3 ॥

आँखहीन का देखकर पकड़ा मृग
हाथहीन ने झोंका
मिट्टी में लोटनेवाला पैरहीन ने
गण्य बिना ही पकड़ा ॥ 4 ॥

सर्वजन सुनो हे कनक कही बात
सभी ग्रहण कर लो
चाँदी की आँखवाले की समझ के बाहर की बात
जानता है आदिकेशव ॥ 5 ॥

भाव : जीवनमुक्त ज्ञानी के अस्तित्व को, पुनर्जन्मराहित्य को, परमात्मा के अनुग्रह और लीला को पहेली या उलटबाँसी की भाषा में छिपाकर प्रस्तुत किया हुआ मुंडिगे है यह।

पहला चरण—जीवन्मुक्त (विदेहमुक्त नहीं) ज्ञानी, काया धारण करनेवाले कायी का होने पर भी पूर्वस्थिति के सारे बंधन वासनाओं से मुक्त हुए निर्लिप्त निरंजन अवस्था में रहता है, इस अर्थ को ध्वनित करता है। चित्र के फूल के मूँगा का काया बनना, अर्थात जली हुई रस्सी, रस्सी के आकार में रहने पर भी, केवल भस्मरूपी के भाव को स्फुरित करता है, इस भाव के पूरक ठहरता है।

दूसरा चरण—जीवी के कर्मबंधन सारे दग्ध होने पर उसका पुनर्जन्म नहीं है, इस अर्थ को, ज्ञानपर्वत (सहस्रार) में सार को पिया हुआ जीव छिलका-बंधन को उतार फेंका फल है, जन्म से बाँझ के पुत्र ठहरे परमात्मा के अनुग्रह के लिए पात्र है, योग्य है के अर्थ को भी ध्वनित करता है।

तीसरा चरण—सूखकर पुनर्जन्म नामक फल को न धरनेवाले वृक्ष को चढ़कर मनोस्थिरता रूपी फल कैरियों को भक्षते हुए, ज्ञान नामक खड्ग से संचित आगामी कर्म के रूंडों को काटने पर प्रारब्ध कर्म उठकर नाचने लगा, यह भाव व्यक्त है।

चौथे चरण में, प्राकृत कर्मेन्द्रियों से रहित अप्राकृत परमात्मा जीवन को निरायासरूप में देख पहचानकर, उसके उद्धार हेतु संसार में झोंककर, उन्नति की ओर ले जाकर, आनंद का प्रदान करना, उसकी एक लीला है, नामक भाव प्रस्तुत है।

पाँचवें चरण में इस पहेली की उलटबाँसी का अर्थ सुज्ञानियों के ही

समझ की बात है, अज्ञानियों के लिए यह पल्ले पड़नेवाली बात नहीं, नामक भाव व्यक्त है।

अर्थ : जन्म से बाँझ का बेटा—माता पिताहीन अनादि पर वस्तु
चाँदी की आँख वाले—बुद्धू, अज्ञानि।

हिन्दुस्थानी काफी—मुट्टताल ?

अनेक जीवन को इकपत्ता निगला
कागिनेलेयादिकेशव जानता है यह पहेली ॥ प ॥

हरि को निगला परब्राह्म को निगला
सुरों के बने देवता को निगला
आग की आँखवाले शिव को इकपत्ता निगला हे देव
हरि के परिवार को इकपत्ता निगला ॥ 1 ॥

आठ गज को निगलकर कंटकपंच को निगलकर
उभरे गिरि के शिरा को निगला
कंटक को धारे ब्राह्र को निगला हे देव
आठ-छः लोकों को इकपत्ता निगला ॥ 2 ॥

वृक्ष को निगला वृक्ष के साल को निगला
वृक्ष के माता पिता को निगला
पहेली जानते हो तो कहो कनकदास
मेरा स्वामीयादिकेशव जानता है यह पहेली ॥ 3 ॥

भाव : मृत्यु अथवा प्रलय सबकुछ को, सबको निगलकर मुटवाता गया का भाव इस लघु पहेली 'मुंडिगे' में दिखाई पड़ता है

अर्थ : इकपत्ता—एकअपत्ता (पत्ता शब्द यहाँ आश्चर्यसूचक अर्थ के रूप में भी प्रयोगित लगता है)

1. सुरों के देवता—इन्द्र

2. आठ गज—अष्ट मद, आठ अहंकार (अन्न मद, अर्थ मद, यौवन मद, शील मद, रूप मद, विद्या मद, तपो मद, राज्य मद)
कंटकपंच—पंचेन्द्रियाँ
आठ-छः—चौदह

3. वृक्ष—सृष्टि
वृक्ष का साल—अज्ञान
वृक्ष के माता-पिता—माया तथा केशव

सौराष्ट्र—मट्टे ताल

बीज तीन को बोकर साज बीज को
राजा का एक भाग राज्य को दो ॥ प ॥

बीज काले को पैर बीज सफेद को मुख
बीज एक और को अठारह आँखें
रंजक के जड़ के राग बत्तीस
कुंजरगमना कोविद की रानी ॥ 1 ॥

पाँच उक्तियों पर वैदिक हैं कहते
पाँच दीपों की हवा बहकर
उड़ी राख की मिट्टी पर लौंदा गूँथकर
बने लोल कहो यह सुभग उलटबाँसी ॥ 2 ॥

उभय नंदि को जोतकर गरुड़ खेत को बोकर
चमड़ा ढँके लाठी का ज्ञाता कहनेवाले
हरि दासों को कनक के उठाये इस पहेली को
वैभवादि केशव की सौं जाननेवाले बूझो ॥ 3 ॥

भाव : सत्व, रज, तम नामक त्रिगुणों से पूरित इस प्रपंच-संसार के वैचित्र्य को यह पहेली गर्भीकृत किया हुआ है। राजा बने भगवान के लिए सत्वगुण का एक हिस्सा प्राप्त है तो राज्य के प्रजाओं के लिए राजोगुण

और तमोगुण का दो हिस्सा मिलेगा। अर्थात परमात्मा में सत्वगुण प्रधान है तो जीवात्माओं में सत्वगुण गौण होकर रजोगुण और तमोगुण प्रधान ठहरने के भाव को यह पहेली प्रस्तुत करती है।

अर्थ : 1. काला बीज—तमोगुण, सफेद बीज—सत्वगुण
बीज एक और—रजोगुण, बीज काले को पैर—तमोगुण मोहकारक है
बीज सफेद को मुख—सत्वगुण प्रकाशक स्वभाव युक्त है
बीज एक और...आँखें—ज्ञानेन्द्रिय पंचक अ कर्मेन्दिय पंचक अ प्राणपंचक अ मन, बुद्धि, अहंकार
रंजक के जड़ के—जीभ, जीव्हा ? के
कुंजरगमना—गजगमना, गंभीर चालवाली, कोविद—विद्वांस, ज्ञानी

2. पाँच उक्तियों—पंच भूतादियों ?
पाँच दीपों की—ज्ञान पंचेन्दियों की
उड़ी राख...गूँथकर—देह नामक मिट्टी के पुतलों को बनाकर

3. उभय नंदि—दो बैल इडा पिंगला नाड़ियाँ
गरुड़—सुषुम्ना नाड़ी
चमड़ा ढँके लाठी का—देह में ही छिपे परमात्मा का

❂❂❂

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
परि. सं. 153621
दि. 24-12-18

Library IIAS, Shimla
H 809.8 Am 16 K
153621

आवरण : राधाकृष्ण स्टूडियो

राधाकृष्ण प्रकाशन

e-BOOK उपलब्ध

आलोचना

₹175

9 788183 618830

www.radhakrishnaprakashan.com